

भारत-मध्य पूर्व-यूरोप गलियारा

प्रिलमिस के लिये:

भारत-मध्य पूर्व-यूरोप गलियारा, [G20 शिखर सम्मेलन](#), [गरीनहाउस गैस \(GHG\)](#), [बेल्ट एंड रोड इनशिएटिवि \(BRI\)](#), यूरेशियन क्षेत्र, SEZ (वशिष आर्थिक क्षेत्र)।

मेन्स के लिये:

भारत-मध्य पूर्व-यूरोप गलियारा, भारत के लिये इसका महत्त्व और चुनौतियाँ।

[स्रोत: द हिंदू](#)

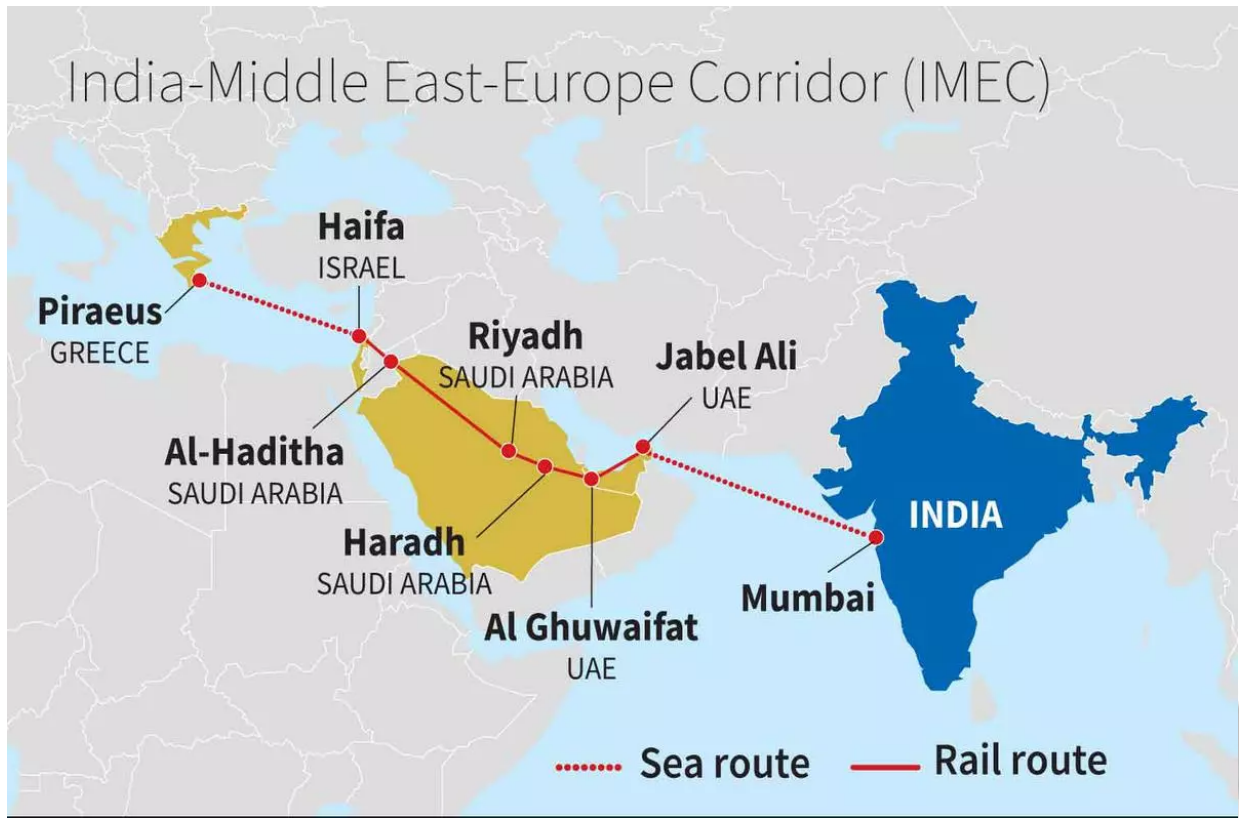
चर्चा में क्यों?

हाल ही में, नई दिल्ली में [G20 शिखर सम्मेलन](#) में भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारा (IMEC) परियोजना पर हस्ताक्षर किये गए, जो भारत के लिये महत्त्वपूर्ण भू-राजनीतिक और आर्थिक नहितार्थ रखता है।

- यह परियोजना [वैश्विक अवसंरचना और निवेश साझेदारी \(PGII\)](#) का हिस्सा है। PGII नमिन और मध्यम आय वाले देशों की विशाल बुनियादी ढाँचे की ज़रूरतों को पूरा करने के लिये एक मूल्य-संचालित, उच्च-प्रभावी तथा पारदर्शी बुनियादी ढाँचा साझेदारी है।

भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारा (IMEC) परियोजना:

- परिचय:
 - प्रस्तावति IMEC में [रेलमार्ग](#), [शिप-टू-रेल नेटवर्क](#) और सड़क परिवहन मार्ग शामिल होंगे जो दो गलियारों तक फैले होंगे, अर्थात,
 - पूर्वी गलियारा - भारत को अरब की खाड़ी से जोड़ता है,
 - उत्तरी गलियारा - खाड़ी को यूरोप से जोड़ता है।
 - IMEC गलियारे में एक वदियुत केबल, एक हाइड्रोजन पाइपलाइन और एक हाई-स्पीड डेटा केबल भी शामिल होंगे।



- **हस्ताक्षरकर्ता देश:**
 - भारत, अमेरिका, सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात, [यूरोपीय संघ](#), इटली, फ्रांस और जर्मनी।
- **जोड़े जाने वाले बंदरगाह:**
 - **भारत:** मुंद्रा (गुजरात), कांडला (गुजरात), और जवाहरलाल नेहरू पोर्ट ट्रस्ट (नवी मुंबई)।
 - **मध्य पूर्व:** संयुक्त अरब अमीरात में फुजैरा, जेबेल अली और अबू धाबी के साथ-साथ सऊदी अरब में दम्मम तथा रास अल खैर बंदरगाह।
 - रेलवे लाइन फुजैरा बंदरगाह (UAE) को सऊदी अरब (घुवाईफात और हराद) तथा जॉर्डन के माध्यम से हाइफा बंदरगाह (इजराइल) से जोड़ेगी।
 - **इजराइल:** हाइफा बंदरगाह
 - **यूरोप:** ग्रीस में पीरथिस बंदरगाह, दक्षिण इटली में मेसिना और फ्रांस में मार्सलिन।
- **उद्देश्य:**
 - इसका उद्देश्य भारत, मध्य पूर्व और यूरोप को जोड़ने वाला एक **व्यापक परिवहन नेटवर्क** बनाना है, जिसमें रेल, सड़क तथा समुद्री मार्ग शामिल हैं।
 - इसका उद्देश्य **परिवहन दक्षता बढ़ाना**, लागत कम करना, आर्थिक एकता बढ़ाना, रोजगार उत्पन्न करना और **ग्रीनहाउस गैस (GHG) उत्सर्जन को कम करना** है।
 - इससे व्यापार और कनेक्टिविटी को सुवर्धन बनाने का उद्देश्य है, यूरोप तथा मध्य पूर्व के एकीकरण में बदलाव आने की आशा है।
- **महत्त्व:**
 - इसके पूरा होने पर यह मौजूदा समुद्री और सड़क परिवहन के पूरक के रूप में सीमा पार से रेलवे परिवहन नेटवर्क उपलब्ध कराएगा।

IMEC के भूराजनीतिक और आर्थिक नहितार्थ:

- **भू-राजनीतिक:**
 - **चीन के BRI को वफिल करना:**
 - IMEC को [यूरोपियन कक्षेत्र](#) में **चीन के बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI)** के संभावित प्रतिस्पर्धी के रूप में देखा जाता है।
 - यह चीन के बढ़ते आर्थिक और राजनीतिक प्रभाव को संतुलित करने का कार्य कर सकता है, विशेषतः अमेरिका के साथ ऐतिहासिक रूप से मजबूत संबंधों वाले कक्षेत्रों में।
 - **सभी सभ्यताओं में एकीकरण:**
 - यह परियोजना **महाद्वीपों और सभ्यताओं के बीच संबंधों एवं एकीकरण** को मजबूत कर सकती है।
 - यह कक्षेत्र में चीन के बढ़ते प्रभाव के बीच **अमेरिका** का प्रभाव बनाए रखने और पारंपरिक भागीदारों को आश्वस्त करने का एक रणनीतिक अवसर प्रदान करता है।
 - **पाकिस्तान के ओवरलैंड कनेक्टिविटी वीटो को तोड़ना:**
 - IMEC ने पश्चिम के साथ **भारत की ओवरलैंड कनेक्टिविटी** पर अपने वीटो को तोड़ते हुए **पाकिस्तान को दरकिनार** कर दिया, जो अतीत में नरितर एक बाधा बना हुआ था।
 - **अरब प्रायद्वीप के साथ रणनीतिक जुड़ाव:**

- गलियारा स्थायी कनेक्टिविटी स्थापति करके और क्षेत्र के देशों के साथ राजनीतिक तथा रणनीतिक संबंधों को बढ़ाकर अरब प्रायद्वीप के साथ भारत की रणनीतिक भागीदारी को मज़बूत करता है।
- अंतर-क्षेत्रीय कनेक्टिविटी और शांति को बढ़ावा देना:
 - IMEC में अंतर-क्षेत्रीय कनेक्टिविटी को बढ़ावा देने की क्षमता है और यह अरब प्रायद्वीप में राजनीतिक तनाव को कम करने में सहायता कर सकता है।
 - यह क्षेत्र में "शांति के लिये बुनियादी ढाँचा" बनने की संभावना रखता है।
- अफ्रीका में भारत की रणनीतिक भूमिका:
 - ट्रांस-अफ्रीकी कॉरिडोर विकसित करने की अमेरिका और यूरोपीय संघ की योजना के अनुरूप, गलियारे के मॉडल को अफ्रीका तक बढ़ाया जा सकता है।
 - यह अफ्रीका के साथ अपने जुड़ाव/अनुबंध को सुदृढ़ करने और इसके अवसंरचना के विकास में योगदान करने के भारत के इरादे को दर्शाता है।
- आर्थिक:
 - उन्नत व्यापार के अवसर:
 - IMEC प्रमुख क्षेत्रों के साथ अपनी व्यापार कनेक्टिविटी बढ़ाकर आर्थिक विकास को बढ़ावा देने की दशा में भारत के लिये एक परिवर्तनकारी अवसर प्रस्तुत करता है।
 - यह मार्ग परिवहन में लगने वाले समय को बहुत हद तक कम कर सकता है, जिससे स्वैज़ नहर समुद्री मार्ग की तुलना में यूरोप के साथ व्यापार 40% तेज़ हो जाएगा।
 - उत्प्रेरति औद्योगिक विकास:
 - यह गलियारा वस्तुओं के नरिबाध परिवहन के लिये एक कुशल परिवहन नेटवर्क तैयार करेगा।
 - इससे विशेषकर गलियारे से जुड़े क्षेत्रों में औद्योगिक विकास को बढ़ावा मलिया कर्कों कंपनियों को कच्चे माल और तैयार उत्पादों के परिवहन में आसानी होगी।
 - रोज़गार सृजन:
 - जैसे-जैसे बेहतर कनेक्टिविटी के कारण आर्थिक गतिविधियों का वसितार होगा, सभी क्षेत्रों में रोज़गार के अवसरों में वृद्धि होगी।
 - व्यापार, बुनियादी ढाँचे और संबद्ध उद्योगों में वसितार हेतु रोज़गार को बढ़ावा देने के लिये कुशल व अकुशल शर्म की आवश्यकता होगी।
 - ऊर्जा सुरक्षा और संसाधन अभिगम:
 - यह गलियारा विशेष रूप से मध्य पूर्व देशों से सुरक्षित ऊर्जा और संसाधन आपूर्ति की सुविधा प्रदान कर सकता है।
 - इन संसाधनों तक विश्वसनीय अभिगम भारत के ऊर्जा क्षेत्र को स्थिर करेगी और इसकी बढ़ती अर्थव्यवस्था को समर्थन देगी।
 - विशेष आर्थिक क्षेत्रों (SEZs) को सुविधा प्रदान करना:
 - इस गलियारे का इसके मार्ग पर SEZ (विशेष आर्थिक क्षेत्र) विकसित करने के लिये रणनीतिक रूप से लाभ उठाया जा सकता है। SEZ विदेशी निवेश को आकर्षित कर सकते हैं, निरिमाण को बढ़ावा दे सकते हैं और इन निर्दिष्ट क्षेत्रों में आर्थिक विकास को गति दे सकते हैं।

भारत-मध्य पूर्व-यूरोप कॉरिडोर (IMEC) की चुनौतियाँ:

- रसद और कनेक्टिविटी मुद्दे:
 - कई देशों तक वसितृत रेल, सड़क और समुद्री मार्गों को शामिल करते हुए एक मल्टीमॉडल ट्रांसपोर्ट कॉरिडोर विकसित करने के लिये हतिधारकों के बीच जटिल/मशिरति लॉजिस्टिक योजना एवं समन्वय की आवश्यकता होती है।
 - सबसे व्यवहार्य और लागत प्रभावी मार्गों का चयन करना, रेल व सड़क कनेक्टिविटी की व्यवहार्यता का आकलन करना तथा इष्टतम कनेक्टिविटी सुनिश्चित करना प्रमुख चुनौतियाँ हैं।
- रेल मार्ग की अनुपलब्धता:
 - विशेषकर मध्य पूर्वी देशों में रेल मार्गों की अनुपलब्धता एक बड़ी समस्या है, रेल नेटवर्क का वसितार करने के लिये पर्याप्त अवसंरचना निरिमाण प्रयासों और निवेश की आवश्यकता है।
- विभिन्न देशों के बीच समन्वय:
 - इस अंतर-महाद्वीपीय गलियारे के निरिमाण को साकार करने में विविध हतियों, कानूनी प्रणालियों और प्रशासनिक प्रक्रियाओं वाले कई देशों के बीच प्रयासों, नीतियों तथा वनियिमों का समन्वय एक बड़ी चुनौती है।
- संभावित विरोध और प्रतिसिपर्द्धा:
 - कॉरिडोर के निरिमाण से मौजूदा परिवहन मार्गों, विशेष रूप से मसिर की स्वैज़ नहर के माध्यम से होने वाले यातायात में कमी और राजस्व में गिरावट देखी जा सकती है, इससे कई चुनौतियाँ एवं राजनयिक बाधाएँ उत्पन्न हो सकती हैं।
- लागत और वसितपोषण:
 - गलियारे के निरिमाण, संचालन एवं रखरखाव के लिये पर्याप्त वसित का अनुमान लगाना और सुरक्षित करना एक महत्त्वपूर्ण चुनौती है।
 - ऐसा अनुमान है कि इस कॉरिडोर के निरिमाण की लागत बड़ी होगी, ऐसे में धन के स्रोतों की पहचान करना आवश्यक है।
 - प्रारंभिक अनुमानों से पता चलता है कि इनमें से प्रत्येक IMEC मार्ग के निरिमाण में 3 बलियन अमरीकी डॉलर से 8 बलियन अमरीकी डॉलर के बीच लागत आ सकती है।

आगे की राह

- वभिन्न देशों में गेज(Gauges), टरेन प्रौद्योगिकियों, कंटेनर के आकर और अन्य महत्त्वपूर्ण पहलुओं के संदर्भ में तकनीकी अनुकूलता एवं मानकीकरण प्राप्त करना इस कॉरिडोर के निर्बाध संचालन के लिये अहम है ।
- सुचारू कार्यान्वयन के लिये **भागीदार देशों के भू-राजनीतिक हितों के बीच समन्वय स्थापति करना** और संभावित राजनीतिक संवेदनशीलताओं को ध्यान में रखना, विशेष रूप से इज़रायल के संदर्भ में, आवश्यक है ।
- पर्यावरणीय प्रभाव संबंधी चिंताओं का समाधान करना, धारणीयता सुनिश्चिती करना और निर्माण व संचालन में हरति तथा पर्यावरण-अनुकूल प्रथाओं का पालन करना इस परियोजना के प्रमुख पहलू हैं ।
- कार्गो और बुनियादी ढाँचे को संभावित खतरों, चोरी व अन्य सुरक्षा जोखिमों से सुरक्षित करने के लिये ठोस सुरक्षा उपायों को लागू करना आवश्यक है ।

PDF Referenece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/india-middle-east-europe-corridor>

